



गे वैडिंग प्लानर की लंड की ख्वाहिश- 1

“गे बाँय सेक्स कहानी में पढ़ें कि एक वैडिंग प्लानर के लिए मैं एक क्लाइंट के असिस्टेंट से मिला. उस गबरू जवान को देखकर मैं अन्दर से मचलने लगा. फिर क्या हुआ ? ...”

Story By: (viren.rathore)

Posted: Saturday, November 28th, 2020

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [गे वैडिंग प्लानर की लंड की ख्वाहिश- 1](#)

गे वैडिंग प्लानर की लंड की ख्वाहिश- 1

📖 यह कहानी सुनें

गे बाँय सेक्स कहानी में पढ़ें कि एक वैडिंग प्लानर के लिए मैं एक क्लाइंट के असिस्टेंट से मिला. उस गबरू जवान को देखकर मैं अन्दर से मचलने लगा. फिर क्या हुआ ?

मेरी गांड एक बड़े लंड के नाम

मैं एक ऐसी गे बाँय सेक्स कहानी से आपको रूबरू करवा रहा हूँ, जहाँ एक वैडिंग प्लानर अपने काम और काम वासना के किस्से सुना रहा है.

शादी किसे अच्छी नहीं लगती.

संगीत, हल्दी, मेहंदी, गाना-बजाना, मेहमान ... नहीं मेहमान नहीं, शायद खाना-पीना और ढेर सारी यादें.

और अगर आपको हर रोज़ नयी यादें बनाने का मौका मिले तो !

अरे नहीं ... हर रोज़ शादी करके नहीं, शादी करवा के. पंडित बनकर नहीं ... बल्कि खुद एक वैडिंग प्लानर बनकर.

प्रणाम, आदाब ... मैं निहार आपके सामने हूँ. मेरी उम्र 23 साल है, गेहुंआ रंग और 5 फुट 11 इंच की हाइट है.

कद काठी में न ज्यादा मोटा, न ही पतला.

बस जो आंखों को सुकून दे ... और जिसे हर वो मर्द जो दूसरे मर्द में दिलचस्पी रखता हो, पसंद करता हो, हां ... कुछ वैसा ही हूँ मैं.

आईने में मैं खुद को जब भी निहारता हूँ, तो सबसे पहला ध्यान मेरी नीली आंखों पर जाता

है. जो मेरे गोरे हसीन चेहरे पर सभी का ध्यान खींच लेती हैं.

अब आइने के सामने हूँ ... तो बालों का जिक्र तो होगा ही.

मेरे बाल घुंघराले हैं और बिना कंघी किए भी मैं काफी अच्छा लग सकता हूँ. काले बाल, हल्की काली दाढ़ी के साथ ही हल्की हल्की मूछें भी हैं.

ये बस उतनी ही बड़ी हैं कि कोई मेरे होंठों को चूमना भी चाहे, तो उसे अपने मुँह में मेरे बाल महसूस न हों.

कद काठी से पूरा लड़का, लड़की जैसी न ही चाल है, न ही बोली. न ही मुझमें लड़कियों की अदाएं हैं और न ही उनकी तरह लटके झटके आते हैं.

पर मैं अपने सीने में एक लड़की का दिल लिए फिरता हूँ ... और जवां मर्दों को देख कर ये दिल धड़क ही जाता है.

मैं पेशे से एक वैडिंग प्लानर हूँ और ये काम मैं अपनी बचपन की दोस्त नैना के साथ करता हूँ. शुरुआत के दिनों में हम दोनों ने मिलकर कई लोगों को शादी के बंधन में बांधने में मदद की, लेकिन हमें सबसे पहली शोहरत तब मिली, जब हमने कानूनी बंदिश के हट जाने के बाद समलैंगिक शादियां करवाईं.

नैना और मैं दोनों ही अपने काम को लेकर जितने गम्भीर हैं ... उतने ही ठरकी और खुशमिजाज भी हैं.

मेरी सेक्स कहानी की इस पेशकश में आप मेरी 7 शादियों के बारे में जानेंगे. मतलब जो मैंने प्लान की थीं.

दिल से मैं आज भी उतना ही कुंवारा हूँ, जितना कि सलमान खान है.

एक दिन मिस्टर एंड मिस्टर धीमान की तरफ से कॉल आया.

उस कॉल के बाद नैना ने मुझे कॉल करके बताया कि दिल्ली की कोई पार्टी है, जो हमसे मिलने के लिए हमारे शहर जयपुर आ रही है. उनको एक ट्रेडीशनल वैडिंग के लिए एक प्लानर चाहिए ... लेकिन इससे ज्यादा उसके पास कोई सूचना नहीं थी.

हम दोनों ने मिलने के लिए हां किया और उन दोनों को जयपुर बुला लिया.
दोनों ने हमें मिलने के लिए जयपुर में अपने होटल में बुलाया ... और अपना पता भेजा.

ये एक ऐसी हवेली का नजारा है जिसे होटल में बदल दिया गया है.
हम जैसे ही इस हवेली के नाम से चर्चित होटल के मेनगेट पर पहुंचे, हमें लेने के लिए एक मर्द गेट पर खड़ा था.

“मिस नैना ?” उसने पूछा.

“जी मैं ही हूँ.” कहते हुए नैना ने उससे हाथ मिलाया.

“हाय, मैं मानवेन्द्र.” ये कहते हुए उसने मेरी तरफ हाथ बढ़ाया ... और मैं अपना हाथ उसके हाथ में देते हुए उसे ताड़ने लगा.

मानवेन्द्र दिखने में काफी मर्दाना और फॉर्मल लुक में कड़ियल मर्द था. उसे देखते ही मैं अन्दर से मचलने लगा.

ये लौंडा बड़ा ही सेक्सी था और फॉर्मल्स में तो वो जैसे कहर ढा रहा था. हाइट में कुछ मेरे ही जितना, रंग सफ़ेद और काले बाल.

कंधे चौड़े और कसा हुआ कटीला बदन. सफ़ेद शर्ट और काली पैंट में भरे भरे कूल्हे और आगे मर्द की पहचान वाला उठा हुआ उभार.

अपने गोल चश्मे को बाएं हाथ से सैट करते हुए मानो कह रहा हो कि जनाब अन्दर तक तो चल लो.

नैना ने मुझे उसे घूरते हुए देखा और कोहनी मारी. मैं अपने होश में आया और उसके हाथ से अपने हाथ को अलग किया.

“हैलो मैं निहार.”

“इस तरफ आइये.” कहते हुए उसने हमें अन्दर चलने को कहा.

वो जैसे ही थोड़ा आगे चला, मैंने नैना को देखा ... और नैना ने मुझे गुस्से से देखा- प्लीज यार, थोड़ा तो प्रोफेशनल रह ले, अपने अरमानों को थोड़ा काबू में रख !

नैना ने कहा तो सामने खड़े लौंडे ने मानो सुना अनसुना कर दिया.

हम तीनों मेनगेट से होते हुए मानवेन्द्र की परफेक्ट शेप वाली मटकती हुई गांड के पीछे-पीछे चल दिए.

नैना से मिली हिदायत के चलते मैंने अपने आपको संभाला और हवेली को देखने लगा. मेनगेट जो दिखने मैं काफी नार्मल था ... उससे अन्दर जाते ही यह एक खूबसूरत से महल की तरह लगता था.

रिसेप्शन पर बड़ा ही खूबसूरत सजा हुआ आंगन था, जिसमें काफी सारे बड़े बड़े कांच के पॉट्स में पानी के ऊपर गुलाब, केवड़ा और चमेली के फूलों को रखा गया था.

रिसेप्शन को पार करने के बाद हम लोग एक आंगन से गुजरे, जिसमें एक छोटा सा स्विमिंग पूल था. उसके बीचों बीच एक फव्वारा लगा था. पास ही में बायीं ओर एक रेस्टोरेन्ट था. उसमें काफी सारे मेहमान बैठे थे ... और पास ही में बज रहे राजस्थानी संगीत का लुत्फ ले रहे थे.

हमें रेस्टोरेन्ट से आगे की तरफ के एक भाग में ले जाया गया, जो मुख्य होटल था.

होटल के नीचे के चौगान में ही एक मेज को बड़ी खूबसूरती से सजाया गया था. उसके इर्दगिर्द 5 कुर्सियां लगी थीं.

मानवेन्द्र ने वेलकम ड्रिंक्स के बाद हमें बताया कि वो मिस्टर धीमान का मैनेजर है, जो उनकी फैमिली की ही तरह है.

मिस्टर धीमान की फ्लाइट मिस हो जाने की वजह से वो लेट नाईट आएंगे. उसी कारण वो हमें सुबह मिलने वाले हैं, तो आज रात हम लोग वहीं हवेली में हमारे लिए बुक किए गए कमरों में रुकेंगे ... और कल सुबह ही हम उनसे मिल सकते हैं.

ये कहते हुए उसने नैना और मुझे हमारे कमरों को चाबी दे दी.

नैना और मैं दोनों ही सफर से थके थे, तो हमने अपने अपने कमरों में जाना ही मुनासिब समझा.

नैना ने उठकर होटल स्टाफ को इशारा करके बुलाया ... और कार से हमारा सामान लेने के लिए चली गयी.

मानवेन्द्र और मैं अब अकेले ही थे.

“मेरा रूम आपके रूम के बाजू में ही है. आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो प्लीज मुझे बताइएगा.”

ये कहते हुए मानवेन्द्र ने मुझे देखकर फिर से अपना चश्मा ठीक किया.

“जी बिल्कुल.” कहते हुए मैं अपने कमरे के लिए उससे पूछने लगा.

“आइए, मैं आपको आपके कमरे तक छोड़ देता हूँ.” कहते हुए उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया.

मैंने झट से उसका हाथ पकड़ा और उसके साथ चल दिया.

रास्ते में ही कई बार संकरी सीढ़ियों में उसने मेरी पीठ को सहलाया और कई बार चौड़े रास्तों में भी मेरे हाथ को बिना छोड़े आंगन के बीच में रखे सामान के ऊपर से ही मुझे लेकर मेरे रूम तक गया.

बीच में उसने मुझे उसे ताड़ते हुए कई बार देख लिया था.

“पसंद आया ?”

“तुम हो ही कमाल.” मैंने मदहोशी के आलम में कह दिया.

“मैं इसकी बात कर रहा था.” कहते हुए उसने एक बर्तन में रखे गुलाबों को तरफ इशारा किया.

फिर उसने एक गुलाब लेकर मुझे दे दिया और कहा- फॉर यू.

इशारा साफ़ था कि लौंडा भी उतना ही बेताब है, जितनी की मेरे अन्दर आग लगी है.

जैसे ही हम दोनों कमरे में पहुंचे, तो कमरे कागोट खोल कर उसने मुझे अन्दर जाने के लिए इशारा किया.

मैं अन्दर घुसा, तो उसे भी आने का इशारा कर दिया.

हम दोनों के घुसते ही मैंने रूम का डोर बंद कर दिया.

मानवेन्द्र भी इशारा समझ गया और अपना चश्मा हटाते हुए भूखे शेर की तरह मेरी तरफ देखा. फिर अचानक से उसने मुझे पर झपट्टा सा मारा और मेरे होंठों को चूमने और चाटने लगा.

उसकी इस बेताबी से मुझे यूँ लगा कि जैसे वो मुझे अभी कच्चा चबा जाएगा.

उसने होंठों को छोड़ दिया और मुझे दरवाजे से सटा कर मेरी गर्दन को चाटना शुरू कर दिया.

मेरी सिसकारी निकल गयी- आह.

उसने मेरी सिसकारी को मेरे ही मुँह में दबाते हुए फिर से मुझे एक जबरदस्त किस किया ... और खुद को मुझसे दूर करते हुए देखने लगा.

तब उसने पूछा- तुम्हें पसंद आया ?

“मैंने जब तुम्हें गेट पर देखा था, तभी मन कर रहा था कि वहीं शुरू हो जाऊं. लेकिन नैना ने रोक दिया, वरना तुम्हें तो मैं गेट पर ही अपनी आंखों से अपने बिस्तर तक ले आने वाला था.”

“मैं कमरे की बात कर रहा था ?” कहते हुए हम दोनों ही हंसने लगे.

देखने में कमरा बड़ा ही खूबसूरत था, लेकिन हवस ने हम दोनों की समझ पर पर्दा डाल रखा था.

इतने में ही नैना ने दरवाजे पर नॉक किया.

हम दोनों अपने आपको ठीक करते हुए सम्भले.

मानवेन्द्र ने अपना चश्मा पहनते हुए नैना को अन्दर बुलाया.

फिर उसने खुद ही नैना से पूछा- आपको आपका कमरा पसंद आया मेम ?

“जी बिल्कुल.” नैना ने जवाब दिया.

वो धम्म से मेरे बेड पर लेट गयी. मैं अभी भी दरवाजे के पास ही खड़ा था.

“ठीक है ... मैं आपसे में डिनर पर मिलता हूँ.” कहते हुए वो रूम से बाहर जाने लगा.

फिर वो पलटा और दबी हुई आवाज में मुझसे बोला- और आपसे डिनर के बाद !

ये कहते हुए वो कमरे से चला गया.

मैंने दरवाजा अन्दर से लॉक कर दिया और बेड पर आ गया.

रात को हम तीनों ने रेस्टोरेंट में जाकर डिनर किया, जहां हमें शादी के बारे में कुछ भी बात करने से मानवेन्द्र ने ये कहकर टाल दिया कि शायद मिस्टर धीमान ये सब कुछ खुद ही हमारे साथ डिसकस करेंगे.

रात को 10 बजे हम दोनों खाने के बाद अपने अपने कमरे में लौट आए.

या यूं कहूँ कि नैना अपने रूम में लौट गयी और मैं अपने रूम में ... लेकिन मानवेन्द्र अपने रूम में नहीं गया.

रात के दस बज चुके थे. मुझे पता था कि जो किस से हमारी शुरुआत हुई है, वो काफी दूर तक जाने वाली थी. इसीलिए मैंने भी अपने दरवाजे को बिना कुंडी लगाए ही बस सटा कर बंद कर दिया था.

सोने से पहले शॉवर लेने की आदत के चलते मैंने अपने रूम में आते ही नहाने का सोचा.

मैंने अपनी शराफत वाली पैट दरवाजे के पास ही अपने जूतों से कुछ दूरी पर उतार दी. उसे वहीं फर्श पर पटकते हुए अपने पैरों से दबाते हुए अपने शर्ट की गिरफ्त से बाहर निकला और उसे अपने बेड पर फेंक दिया.

अंडरवियर को बाथरूम डोर से पहले ही अपने घुटनों तक नीचे किया और उसके नीचे गिरते ही अपने बाएं और ... फिर दाएं पैर से अंडरवियर को हटाते हुए उसे वहीं बाहर छोड़ कर मैंने बाथरूम में एंट्री कर ली.

मैं शॉवर के नीचे खड़ा हो गया.

अपने ही शरीर को निहार लेना, मेरी उन आदतों में से एक है ... जो मैं हर रोज करता हूँ.

सिंक के पास ही लगे हेड टू टो मिरर में मैंने अपने आपको देखा. मेरी बाँडी पर एक भी बाल नहीं था सिवाय मेरे चेहरे, अंडर आर्म्स और मेरे लंड के पास आयी हुई हल्की हल्की झांटों के पास.

बाथरूम के एक कोने में ही मोटे कांच का एक शॉवर सैल बना हुआ था.

कांच के बाथ केबिन अन्दर जाकर मैंने शॉवर को चालू कर दिया और उस पानी से अपने आपको तर करने लगा.

शॉवर से एक फव्वारा सा निकल फूटा और एक मेरे मन में टाँगें उठने लगीं.
इन तरंगों के मध्य मेरे मन में तो अभी भी वही भूचाल चल रहा था, जो मानवेन्द्र की चुम्मियों से उभर आया था.

शॉवर से तेज पानी की सरसराहट हो रही थी. ये वाकयी बहुत तेज थी.

पानी की बूँदें जैसे ही शरीर पर पड़ीं, मैंने अपने शरीर को मलना शुरू कर दिया. बस मलते मलते मेरे हाथ मेरे अपने होंठों तक चले गए. वही अहसास, वही खुशबू महकने लगी और वही चुभन फिर से लौट आयी.

मेरे चेहरे पर एक मुस्कराहट छा गयी थी. मैंने अपने चेहरे को शॉवर की तरफ किया और आंखें बंद करके मानवेन्द्र के साथ हुए उस छोटे से पल को याद करने लगा.

मैंने अपने सपने के राजकुमार के साथ बिताए पलों को याद करते हुए धीरे धीरे उंगलियां अपने बदन पर घुमाईं और बदन को मसलने लगा.

तभी अचानक मुझे एक हाथ मेरी कमर पर महसूस हुआ और एक झटके में ही उस बाथरूम में मेरा नंगा बदन अकेला नहीं रह गया.

मेरा मन एक जानी पहचानी महक और दिल की हसरत पूरी करने की मन्नत पूरी होती देख कर खिल गया था.

आपको मेरी इस गे बॉय सेक्स कहानी को लेकर क्या लगा, प्लीज़ मुझे मेल जरूर करें.
viren.coolrathore@gmail.com

गे बॉय सेक्स कहानी का अगला भाग : [गे वैडिंग प्लानर की लंड की ख्वाहिश- 2](#)

Other stories you may be interested in

गे वैडिंग प्लानर की लंड की ख्वाहिश- 2

प्री गे पोर्न स्टोरी में पढ़ें कि मुझे क्लाइंट का अस्सिस्टेंट पसंद आ गया. मैं उसके साथ होमोसेक्स का मजा लेना चाहता था. हम दोनों का खेल कैसे शुरू हुआ ? हैलो, मैं निहार, आपका अपनी वासना से भरी एक मदमस्त [...]

[Full Story >>>](#)

देसी गर्लफ्रेंड की चुदाई उसी के घर में

गाँव की लड़की की सेक्स कहानी में पढ़ें कि मैंने अपने मामा की पड़ोसन लड़की चोद दी थी. जब मैं दोबारा गाँव गया तो उससे मिल कर दोबारा चुदाई का प्रोग्राम बनाया. दोस्तो, मैं विवेक एक बार फिर से आपकी [...]

[Full Story >>>](#)

ज़ारा की मोहब्बत- 7

मैं एक हाथ से उसकी क्लिट और दूसरे से उसकी गांड के छेद को सहलाने लगा. जब उससे से रहा नहीं गया तो वो ऊपर-नीचे होने लगी ! ज़ारा- आह ... जान ... जान चोद दो मुझे ! अब मैंने उसे नीचे [...]

[Full Story >>>](#)

माल गर्लफ्रेंड को मैंने मॉल में चोदा

ऑफिस गर्ल सेक्स कहानी में पढ़ें कि मेरे साथ मॉल में काम करने वाली लड़की से मेरी दोस्ती हुई. एक दिन उसकी जीन्स से बाहर निकली पैटी दिखी मुझे ! तो क्या हुआ ? नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम मानव (बदला हुआ) है. [...]

[Full Story >>>](#)

मेरी कमसिन दोस्त- 4

देसी सुहागरात कहानी में पढ़ें कि कैसे मैंने कॉलेज की एक नाजुक लड़की की बुर की सील अपने घर में अपने बेडरूम में तोड़ी. ये सब कैसे कैसे हुआ ? मैं चंद्रकुमार अपनी देसी सुहागरात कहानी का अगला भाग लेकर पेश [...]

[Full Story >>>](#)

